International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

Original Article

जगदेव प्रसाद का सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन : एक अध्ययन

डॉ. बिपिन कुमार

अतिथि सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,

राम लखन सिंह यादव कॉलेज, औरंगाबाद, बिहार

Manuscript ID:
IJAAR-130603
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 6
July – August 2026
Pp. 16 - 21

Submitted: 04 June 2026
Revised: 20 June 2026
Accepted: 5 July 2026
Published: 10 July 2026

Corresponding Author:
डॉ. बिपिन कुमार

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.21721330

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.21721330

सारांश:

भारतीय समाज और राजनीति के इतिहास में जगदेव प्रसाद का नाम सामाजिक न्याय और समानता के संघर्षशील नेता के रूप में सम्मानपूर्वक लिया जाता है। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता और राजनीतिक वर्चस्व के विरुद्ध आवाज उठाई तथा पिछड़े, दलित, किसान और मजदूर वर्ग के अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष किया। उनका विश्वास था कि लोकतंत्र तभी मजबूत और सफल हो सकता है, जब समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर, सम्मान और राजनीतिक भागीदारी प्राप्त हो।

जगदेव प्रसाद ने अपने विचारों और आंदोलनों के माध्यम से वंचित समुदायों में जागरूकता पैदा करने तथा उन्हें सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास किया। वे ऐसी व्यवस्था के पक्षधर थे जिसमें समाज के सभी वर्गों को उनकी जनसंख्या और आवश्यकता के अनुसार उचित प्रतिनिधित्व और अधिकार मिल सकें। उनका सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन सामाजिक न्याय, समानता, लोकतांत्रिक भागीदारी और मानवीय गरिमा के सिद्धांतों पर आधारित था।

प्रस्तुत शोध-पत्र में जगदेव प्रसाद के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों, उनके संघर्षों तथा भारतीय समाज और राजनीति पर उनके योगदान का अध्ययन किया गया है। साथ ही वर्तमान समय में उनके विचारों की प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया है।

मुख्य शब्द: जगदेव प्रसाद, सामाजिक न्याय, समानता, पिछड़ा वर्ग, लोकतंत्र, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सामाजिक परिवर्तन।

Creative Commons

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. बिपिन कुमार. (2026). जगदेव प्रसाद का सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन : एक अध्ययन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(6), 16 – 21.
https://doi.org/10.5281/zenodo.21721330

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

प्रस्तावना:

भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना तो हुई, किन्तु सामाजिक और राजनीतिक समानता का सपना पूरी तरह साकार नहीं हो सका। समाज का एक बड़ा वर्ग शिक्षा, रोजगार, प्रशासन और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपेक्षित भागीदारी से वंचित रहा। विशेष रूप से पिछड़े, दलित, किसान और मजदूर समुदाय सामाजिक तथा आर्थिक असमानताओं का सामना करते रहे। ऐसे समय में कुछ नेताओं ने इन वर्गों की आवाज को मजबूती से उठाया और सामाजिक न्याय को राजनीतिक विमर्श के केंद्र में लाने का प्रयास किया। इन्हीं नेताओं में जगदेव प्रसाद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।[1]

जगदेव प्रसाद केवल एक राजनेता नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन के समर्थक, जननेता और सामाजिक न्याय के प्रखर विचारक थे। उन्होंने अपने जीवन और संघर्ष के माध्यम से यह संदेश दिया कि लोकतंत्र तभी सार्थक हो सकता है जब समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर, सम्मान और भागीदारी प्राप्त हो। वे जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता और राजनीतिक वर्चस्व के विरोधी थे तथा एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे जिसमें न्याय और समानता केवल आदर्श न रहकर व्यवहारिक रूप में दिखाई दे।[2]

उनका सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन मुख्यतः शोषित, वंचित और उपेक्षित वर्गों के अधिकारों तथा उनके सशक्तिकरण पर आधारित था। यही कारण है कि आज भी सामाजिक न्याय और समान प्रतिनिधित्व की चर्चा में जगदेव प्रसाद के विचारों को विशेष महत्व दिया जाता है।[3]

जगदेव प्रसाद:

जीवन परिचय:

जगदेव प्रसाद का जन्म 2 फरवरी 1922 को बिहार के वर्तमान अरवल जिले के कुर्था प्रखंड स्थित कुरहारी गाँव में हुआ था। उनका प्रारम्भिक जीवन ग्रामीण परिवेश में बीता, जहाँ उन्होंने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता, सामाजिक भेदभाव और जातिगत असमानताओं को निकट से देखा। इन अनुभवों ने उनके व्यक्तित्व और विचारों को गहराई से प्रभावित किया। [4]

शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सार्वजनिक जीवन और सामाजिक गतिविधियों से जुड़ गए। प्रारम्भ से ही उनका झुकाव समाजवादी विचारधारा की ओर था और वे समाज के कमजोर एवं वंचित वर्गों के अधिकारों के प्रति संवेदनशील थे। उन्होंने राजनीति को व्यक्तिगत लाभ या सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और जनसेवा का साधन माना।[5]

जगदेव प्रसाद ने अपने राजनीतिक जीवन में पिछड़े, दलित, किसान और मजदूर वर्ग के अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष किया। वे मानते थे कि लोकतंत्र की सफलता तभी संभव है जब समाज के सभी वर्गों को शासन और प्रशासन में उचित भागीदारी प्राप्त हो। उनके विचारों और संघर्षों ने बिहार ही नहीं, बल्कि पूरे देश की सामाजिक न्याय की राजनीति को नई दिशा प्रदान की।[6]

5 सितम्बर 1974 को एक आंदोलन के दौरान पुलिस गोलीबारी में उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु को सामाजिक न्याय के संघर्ष में एक बड़ी क्षति माना गया। आज भी उन्हें सामाजिक परिवर्तन, समानता और वंचित समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले एक निर्भीक जननेता के रूप में याद किया जाता है।[7]

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

जगदेव प्रसाद का सामाजिक चिंतन:

जगदेव प्रसाद का सामाजिक चिंतन सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा के सिद्धांतों पर आधारित था। वे मानते थे कि किसी भी समाज की प्रगति तभी संभव है, जब उसमें रहने वाले सभी लोगों को समान अवसर और सम्मान प्राप्त हो। उनका विचार था कि भारतीय समाज में लंबे समय से चली आ रही जातिगत असमानताओं और सामाजिक भेदभाव ने समाज के एक बड़े वर्ग को विकास की मुख्यधारा से दूर रखा है। इसलिए उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय ऐसे समाज के निर्माण के लिए समर्पित किया जिसमें समानता, न्याय और भाईचारे की भावना स्थापित हो सके।

सामाजिक समानता का विचार:

जगदेव प्रसाद सामाजिक समानता के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि किसी व्यक्ति की पहचान उसकी जाति, धर्म, जन्म या पारिवारिक पृष्ठभूमि से नहीं, बल्कि उसके कार्य, योग्यता और मानवीय गुणों से होनी चाहिए। वे उस सामाजिक व्यवस्था के विरोधी थे जिसमें जन्म के आधार पर लोगों के अधिकार और अवसर निर्धारित किए जाते हैं।

उनके अनुसार लोकतंत्र केवल राजनीतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समानता और न्याय की भावना पर आधारित जीवन पद्धति है। यदि समाज में कुछ वर्ग विशेषाधिकार प्राप्त करें और अन्य वर्ग वंचित बने रहें, तो लोकतंत्र का उद्देश्य अधूरा रह जाता है। इसलिए उन्होंने समाज में समान अवसर और समान सम्मान की स्थापना पर विशेष बल दिया।[1]

जातिगत शोषण और सामाजिक वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष:

जगदेव प्रसाद ने भारतीय समाज में विद्यमान जातिगत भेदभाव और सामाजिक वर्चस्व की खुलकर आलोचना की। उनका मानना था कि जाति व्यवस्था ने समाज को विभाजित किया है तथा करोड़ों लोगों को शिक्षा, रोजगार और सम्मानजनक जीवन से दूर रखा है।

वे केवल सैद्धांतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी इस व्यवस्था के विरोध में संघर्षरत रहे। उन्होंने सामाजिक न्याय को केवल एक राजनीतिक मुद्दा न मानकर सामाजिक परिवर्तन का आधार माना। उनका विश्वास था कि जब तक समाज के कमजोर वर्गों को समान अधिकार और अवसर नहीं मिलेंगे, तब तक सामाजिक समरसता स्थापित नहीं हो सकती।[2]

पिछड़े, दलित और वंचित वर्गों का उत्थान:

जगदेव प्रसाद का चिंतन मुख्यतः पिछड़े, दलित, किसान, मजदूर और वंचित वर्गों के अधिकारों के इर्द-गिर्द केंद्रित था। वे मानते थे कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास के लाभ पहुँचने चाहिए। यदि विकास केवल कुछ वर्गों तक सीमित रह जाए, तो वह वास्तविक विकास नहीं कहा जा सकता।

उन्होंने वंचित समुदायों को सामाजिक और राजनीतिक रूप से जागरूक बनाने का प्रयास किया तथा उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। उनका मानना था कि किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें समाज के कमजोर वर्गों की कितनी भागीदारी है।[3]

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम:

जगदेव प्रसाद शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी साधन मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति को केवल ज्ञान ही नहीं देती, बल्कि उसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक भी बनाती है।

वे चाहते थे कि समाज के गरीब, पिछड़े और वंचित वर्गों को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हों, क्योंकि शिक्षा के बिना सामाजिक और आर्थिक उन्नति संभव नहीं है। उनका विश्वास था कि शिक्षित समाज ही अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है और लोकतंत्र को मजबूत बना सकता है।[4]

किसान और मजदूर वर्ग के प्रति संवेदनशीलता:

जगदेव प्रसाद किसानों और मजदूरों की समस्याओं के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे। उनका मानना था कि देश की आर्थिक व्यवस्था का आधार किसान और श्रमिक हैं, इसलिए उनके जीवन स्तर में सुधार होना आवश्यक है। वे उनके लिए उचित मजदूरी, बेहतर जीवन-स्थितियों और सामाजिक सुरक्षा के पक्षधर थे।[5]

जगदेव प्रसाद का राजनीतिक चिंतन:

जगदेव प्रसाद का राजनीतिक चिंतन सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक भागीदारी और समान प्रतिनिधित्व की अवधारणा पर आधारित था। उन्होंने राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का माध्यम माना। उनके लिए राजनीति का उद्देश्य समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को अधिकार और सम्मान दिलाना था।

सामाजिक न्याय आधारित राजनीति :

जगदेव प्रसाद की राजनीति का मूल आधार सामाजिक न्याय था। वे मानते थे कि लोकतंत्र की सफलता तभी संभव है जब शासन और प्रशासन में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित हो। उनकी दृष्टि में राजनीति का उद्देश्य केवल सरकार बनाना नहीं, बल्कि समाज में न्याय और समानता स्थापित करना था।[6]

राजनीतिक प्रतिनिधित्व की अवधारणा :

जगदेव प्रसाद राजनीतिक प्रतिनिधित्व को लोकतंत्र की आत्मा मानते थे। उनका विचार था कि जिस वर्ग की जितनी जनसंख्या है, उसे उसी अनुपात में शासन और प्रशासन में भागीदारी मिलनी चाहिए।

उनका प्रसिद्ध नारा— **"सौ में नब्बे शोषित हैं, नब्बे भाग हमारा है।"**

सिर्फ एक राजनीतिक नारा नहीं था, बल्कि सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व की मांग का प्रतीक था। यह नारा उन वर्गों की राजनीतिक भागीदारी की आवश्यकता को व्यक्त करता था, जो लंबे समय से सत्ता संरचनाओं से बाहर रहे थे।[7]

लोकतंत्र की व्यापक अवधारणा:

जगदेव प्रसाद लोकतंत्र को केवल चुनावों तक सीमित नहीं मानते थे। उनके अनुसार वास्तविक लोकतंत्र वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर, समान अधिकार और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी प्राप्त हो।

वे मानते थे कि यदि समाज के कमजोर वर्ग लोकतांत्रिक संस्थाओं में उचित प्रतिनिधित्व से वंचित रह जाएँ, तो लोकतंत्र केवल औपचारिक व्यवस्था बनकर रह

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

जाएगा। इसलिए उन्होंने सामाजिक और आर्थिक न्याय को लोकतंत्र का आवश्यक तत्व माना।[8]

समाजवादी विचारधारा का समर्थन:

जगदेव प्रसाद समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे। वे आर्थिक संसाधनों के समान वितरण और राज्य की कल्याणकारी भूमिका के समर्थक थे। उनका मानना था कि आर्थिक असमानता सामाजिक असमानता को और अधिक बढ़ाती है।

वे ऐसी आर्थिक व्यवस्था चाहते थे जिसमें समाज के सभी वर्गों को विकास के समान अवसर प्राप्त हों और संसाधनों पर कुछ लोगों का एकाधिकार समाप्त हो।[9]

संघर्ष और जनआंदोलन की राजनीति:

जगदेव प्रसाद का विश्वास जनशक्ति और जनआंदोलन में था। वे मानते थे कि केवल कानून बना देने से सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज में जागरूकता और सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

उन्होंने व्यवस्था परिवर्तन को सत्ता परिवर्तन से अधिक महत्वपूर्ण माना। उनका विचार था कि जब तक सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक वास्तविक लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सकेगा।[10]

समकालीन संदर्भ में जगदेव प्रसाद की प्रासंगिकता:

आज भारत में सामाजिक न्याय, आरक्षण, समान अवसर, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और समावेशी विकास जैसे प्रश्न निरंतर चर्चा के विषय बने हुए हैं। ऐसे समय में जगदेव प्रसाद के विचार पहले की अपेक्षा अधिक प्रासंगिक दिखाई देते हैं।

वर्तमान समय में भी समाज के अनेक वर्ग शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ऐसे में जगदेव प्रसाद का सामाजिक न्याय आधारित चिंतन हमें एक अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण की दिशा में प्रेरित करता है।[11]

उनके विचार यह संदेश देते हैं कि लोकतंत्र की सफलता केवल चुनाव कराने में नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर और सम्मान प्रदान करने में निहित है। आज भी उनके विचार सामाजिक परिवर्तन, समानता और न्याय के लिए कार्य करने वाले लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

विशेष रूप से युवाओं के लिए जगदेव प्रसाद का जीवन यह संदेश देता है कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा करना भी है। यही कारण है कि सामाजिक न्याय की चर्चा में आज भी उनका नाम सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है।

उपसंहार:

जगदेव प्रसाद भारतीय समाज और राजनीति के उन विरल चिंतकों और जननेताओं में से थे जिन्होंने अपने विचारों और संघर्षों के माध्यम से सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक भागीदारी को नई दिशा प्रदान की। उनका संपूर्ण जीवन शोषित, वंचित, पिछड़े, किसान और मजदूर वर्ग के अधिकारों के लिए समर्पित रहा। उन्होंने सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और राजनीतिक वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष करते हुए यह स्पष्ट किया कि लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी और सम्मान में निहित है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

जगदेव प्रसाद का सामाजिक चिंतन समान अवसर, सामाजिक समरसता और मानवीय गरिमा पर आधारित था। वे मानते थे कि जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति को विकास और सम्मान का अधिकार प्राप्त नहीं होगा, तब तक लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की अवधारणा अधूरी रहेगी। इसी प्रकार उनका राजनीतिक चिंतन सत्ता के केंद्रीकरण के बजाय राजनीतिक प्रतिनिधित्व, जनभागीदारी और सामाजिक न्याय पर आधारित था।

उन्होंने राजनीति को केवल शासन या सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं माना, बल्कि इसे सामाजिक परिवर्तन और जनकल्याण का सशक्त साधन समझा। उनका विश्वास था कि लोकतंत्र तभी सार्थक होगा जब समाज के सभी वर्गों को निर्णय प्रक्रिया में उचित स्थान और प्रतिनिधित्व प्राप्त होगा। यही कारण है कि उनके विचार आज भी सामाजिक न्याय, समान अवसर और समावेशी विकास की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

वर्तमान समय में जब सामाजिक न्याय, आरक्षण, समान प्रतिनिधित्व और समावेशी विकास जैसे प्रश्न राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में हैं, तब जगदेव प्रसाद के विचार और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका जीवन और चिंतन आज भी समाज के लिए प्रेरणा, जागरूकता और संघर्ष का संदेश देता है। इस दृष्टि से जगदेव प्रसाद केवल एक राजनीतिक नेता नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक मूल्यों के सशक्त प्रतीक के रूप में स्मरणीय हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. प्रसाद, जगदेव. भाषण एवं लेख संग्रह। पटना: जगदेव प्रसाद स्मारक प्रकाशन, 1978, पृ. 25–41, 63–75।
2. शर्मा, रामविलास. भारतीय समाज और राजनीति। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 112–126।
3. यादव, के.सी. भारत में सामाजिक न्याय का आंदोलन। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2012, पृ. 85–109।
4. ओमवेद्त, गेल. दलित और लोकतांत्रिक आंदोलन। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन, 2008, पृ. 143–148।
5. जगदेव प्रसाद स्मारक समिति. जगदेव प्रसाद : व्यक्तित्व और कृतित्व। पटना: स्मारक समिति प्रकाशन, 1998, पृ. 21–78।
6. कुमार, विजय. बिहार में सामाजिक न्याय की राजनीति। पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2015, पृ. 54–72।
7. भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन से संबंधित विभिन्न शोध-पत्र, जर्नल लेख एवं संदर्भ ग्रंथ।